संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । सुगमं । वेउव्विय-आहारतिगमोघं ।

मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियतिगस्स मणुसपज्जत्तभंगो ।

संजदेसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं सव्वत्थोवा परिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियआहारतिगस्स मणुसपज्जत्तभंगो । एवं सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु णत्थि अप्पाबहुगं, तत्थ वेउव्विय-आहारतिगाभावेण एगपदत्तादो । संजदासंजदेसु ओरालियदोण्णं पदाणं विभंगभंगो । वेउव्वियतिण्णिपदाणं तिरिक्खभंगो ।

चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणी ओघं । णवरि तेजा-कम्मइय-परिसादणकदी णत्थि । ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो । किण्ण-णील-काउलेस्सिएसु ओरालियतिगमोघं ।

....

वाले पाये जाते हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इसका कारण सुगम है । वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ।

मन:पर्ययज्ञानियोंमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा मनुष्य पर्याप्तोके समान है ।

संयतोंमें औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा मनुष्य पर्याप्तोके समान है । इसी प्रकार सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती ।

परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें अल्पबहुत्व नहीं है । क्योंकि, उनमें वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंका अभाव होनेसे औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरका संघातन-परिशातन रूप केवल एक पद होता है । संयतासंयतोंमें औदारिकशरीरके दो पदोंकी प्ररूपणा विभंगज्ञानियोके समान है । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंचोके समान है ।

चक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा त्रस पर्याप्तोके समान है । अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोके समान है ।

कृष्ण, नील, और कापोत लेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरके तीनों पदोंकी

वेउव्वियसरीरस्स सव्वत्थोवा परिसादणकदी । संघादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेउलेस्सिएसु ओरालियतिण्णिपदाणमाहारतिण्णिपदाणं च आभिणिबोहियभंगो । वेउव्वियतिण्णिपदाणं विभंगभंगो । एवं पम्माए । णवरि[1] वेउव्विय-तिण्णिपदाणं तिरिक्खभंगो, सणक्कुमार-माहिंददेवेहिंतो तिरिक्खपम्मलेस्सियजीवाणं पदरस्स असंखेज्जदिभागाणं पाहण्णियादो । सुक्काए सगसव्वपदाणं तेउलेस्सियभंगो । भवसिद्धियाणं ओघभंगो ।

सम्माइट्ठीणमाभिणिबोहियभंगो । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणं तसभंगो । वेदगसम्माइट्ठीणं आभिणिबोहियभंगो । खइयसम्मादिट्ठीसु सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-संघादणकदी, संखेज्जत्तादो एगसमयसंचिदत्तादो । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, अन्तोमुहुत्तसंचिदासंखेज्जरासित्तादो । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । सुगमं । आहार-तेजा-कम्मइयपदाणं सम्माइट्ठिभंगो ।

....

प्ररूपणा ओघके समान है । वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।

तेजलेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरके तीनों पद तथा आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा विभंगज्ञानियोंके समान है । इसी प्रकार पद्मलेश्यावाले जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंचोंके समान है, क्योंकि, सानत्कुमार और माहेन्द्रकल्पके देवोंकी अपेक्षा यहां जगप्रतरके असंख्यातवें भाग मात्र तिर्यंच पद्मलेश्यावाले जीवोंकी प्रधानता है ।

शुक्ललेश्यामें अपने सब पदोंकी प्ररूपणा तेजलेश्यावाले जीवोंके समान है । भवसिद्धिक जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ।

सम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरके दोनो पदोंकी प्ररूपणा त्रस जीवोंके समान है । वेदकसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिक व वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे संख्यात व एक समय संचित हैं । इनसे उनकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्त संचित असंख्यात राशि रूप हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । कारण इसका सुगम है । आहारक, तैजस और कार्मणशरीरके पदोंकी प्ररूपणा सम्यग्दृष्टियोंके समान है ।

....

१ प्रतिषु 'एवं पमाणेण णवरि' इति पाठः ।

उवसमसम्माइट्ठीसु ओरालियदोपदाणं संजदासंजदभंगो । वेउव्वियतिण्णिपदाणं खइयसम्माइट्ठिभंगो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठीणं । सासणे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदी । संघादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा ।

सण्णीणं पुरिसभंगो । आहारएसु ओघं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । अणाहारएसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणकदी

....

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकशरीरके दो पदोंकी प्ररूपणा संयतासंयतोंके समान है। वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके समान है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके कहना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। इनसे उनकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं।

संज्ञी जीवोंकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोंके समान है । आहारक जीवोंमें अपने पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती। अनाहारक जीवोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं। इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

परस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है । आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे इसकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिक-

अणंतगुणा। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो ? वेउव्विय-आहारतिण्णिपदसहिदओरालियसंघादण-कम्मइयमेत्तो।

आदेसेण णेरइएसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। एवं सव्वणेरइय-सव्वदेवेसु। णवरि सव्वट्ठे संखेज्जगुणं कायव्वं।

तिरिक्खेसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी। परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? वेउव्वियसंघादणमेत्तेण। संघादणकदी अणंतगुणा। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्ज-

....

शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

शंका - वह विशेष कितना है ?

समाधान - वह विशेष वैक्रियिक व आहारकशरीरके तीन पदसहित औदारिकशरीरकी संघातनकृतिवाले जीवोंका प्रमाण कार्मणशरीरके जीवोंकी बराबर है।

आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार सब नारकियों और सब देवोंमें कहना चाहिये। विशेष कहना है कि सर्वार्थसिद्धि विमानमें संख्यातगुणा करना चाहिये।

तिर्यंचोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

शंका - कितने मात्र विशेषसे अधिक हैं ?

समाधान - वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवों मात्र विशेषसे वे अधिक हैं।

औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीवोंसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं।

गुणा। तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया। पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स। णवरि जम्हि अणंतगुणं तम्हि असंखेज्जगुणमिदि वत्तव्वं। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा ओरालियसंघादणकदी। संघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइय-संघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया।

मणुसेसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी। परिसादणकदी संखेज्जगुणा। संघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादणकदी संखेज्जगुणा। परिसादणकदी संखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। संघादणकदी असंखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया। एवं मणुसपज्जत्तस्स वि। णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कादव्वं। मणुसिणीसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी। वेउव्वियसंघादणणकदी संखेज्जगुणा। परिसादणकदी

....

उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

इसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीनके कहना चाहिये। विशेष इतना है कि जहांपर अनन्तगुणा कहा है वहांपर असंख्यातगुणा ऐसा कहना चाहिये। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

मनुष्योंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे उसीकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्तकके भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि जहां असंख्यातगुणा है वहां संख्यातगुणा करना चाहिये।

मनुष्यनियोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे

संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्तभंगो ।

एइंदिय-बादरेइंदियाणं तेसिं पज्जत्ताणं च तिरिक्खोघं । बादरेइंदियअपज्जत्त-सव्वसुहुम-सव्वविगलिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्त-सव्वपुढवीकाइय-सव्वआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयअपज्जत्त-सव्वसुहुमतेउकाइय-वाउकाइय-सव्ववणप्फदि-सव्वणिगोद-सव्ववणप्फदिपत्तेयसरीर-तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो । पंचिंदियाणं ओघं । णवरि जम्हि अणंतगुणं तम्हि असंखेज्जगुणं कायव्वं । अधवा, वेउव्वियसंघादणादो ओरालियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा ।

पंचिंदियअपज्जत्तएसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा ।

....

उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातनकृतियुक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे संघातन-परिशातनकृतिवाले जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोके समान है ।

एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्तोंकी प्ररूपणा तिर्यंच ओघके समान है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सब सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, सब पृथिवीकायिक, सब जलकायिक, बादर तेजकायिक व बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सब सूक्ष्म तेजकायिक, सब सूक्ष्म वायुकायिक, सब वनस्पतिकायिक, सब निगोद, सब वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा त्रस अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । पंचेन्द्रियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि जहांपर अनन्तगुणा है वहांपर असंख्यातगुणा करना चाहिये । अथवा, उनमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवोंसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परि-

संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा। वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा। वेउव्विय-संघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियसंघादणपरिसादणकदी संखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया।

तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयतेसिंपज्जत्ताणं पंचिंदि-तिरिक्खभंगो। तसदुगस्स पंचिंदियदुगभंगो।

पंचमणजोगि तिण्णिवचिजोगीसु सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादण-कदी विसेसाहिया। ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया।

....

शातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यात गुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

तेजकायिक, वायुकायिक, बादर तेजकायिक और बादर वायुकायिक तथा उन सबके पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके समान है। त्रस और त्रस पर्याप्तोंकी प्ररूपणा क्रमशः पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है।

पांच मनयोगी और तीन वचनयेगी जीवोंमें आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

....

१ प्रतिषु 'तेउ०' इति पाठः।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालिय-परिसादणकदी विसेसाहिया। वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालिय-संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया।

कायजोगी ओघं। णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि। ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी। वेउव्वियसंघादणमसंखेज्जगुणं। परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियसंघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा। तेजा-कम्मइय-संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियमिस्सकायजोगीसु पंचिंदियअपज्जत्तभंगो। वेउव्वियकायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुगं, तिण्णिपदाणं सारिच्छियादो। वेउव्विय-मिस्सकायजोगीणं णारगभंगो।

आहारकायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुगं, चदुण्हं पदाणं सारिच्छियादो। आहारमिस्स-कायजोगीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी। संघादण परिसादणकदी संखेज्जगुणा। ओरा-

....

वचनकाययोगी और असत्य-मृषावचनयोगी जीवोंमें आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघतान-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

काययोगी जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातकृति नहीं होती। औदारिककाययोगियोंमें आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें अपने पदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है। वैक्रियिककाययोगियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उनमें तीनों पद सदृश्य हैं। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी प्ररूपणा नारकियोंके समान है।

आहारककाययोगियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उनमें चारों पद समान हैं। आहारकमिश्रकाययोगियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी

लियपरिसादणकदी तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी तिण्णि वि सरिसा विसेसाहिया।

कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा।

इत्थिवेदेसु सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादणकदी संखेज्जगुणा। ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया।

पुरिसवेदेसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी। परिसादणकदी संखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। वेउव्वियपरिसादणकदी संखेज्जगुणा। सेसस्स इत्थिवेदभंगो। णउंसयवेदा तिरिक्खोघं।

अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी। ओरालियपरिसादणकदी

....

परिशातनकृति तथा तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति, इन तीनों पदोंसे युक्त जीव सदृश विशेष अधिक हैं।

कार्मणकाययोगियोमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं।

स्त्रीवेदियोमें वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

पुरुषवेदियोमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। शेष पदोंकी प्ररूपणा स्त्रीवेदियोंके समान है। नपुंसकवेदियोंकी प्ररूपणा सामान्य तिर्यंचोके समान है।

अपगतवेदियोमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे

विसेसाहिया। संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। चदुण्हं कसायाणं कायजोगिभंगो। अकसाईणमवगदवेदभंगो।

मदि-सुदअण्णाणीसु सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। सेसपदा ओघं। विभंगणाणीसु सव्वत्थोवा वेउव्विसंघादणकदी। परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। संघादणपरिसादण-कदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी। परिसादणकदी संखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा। वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया।

....

उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। चार कषाय युक्त जीवोंकी प्ररूपणा काययोगियोंके समान है। अकषायी जीवोंकी प्ररूपणा अपगतवेदियोंके समान है।

मति व श्रुत अज्ञानी जीवोंमें वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। शेष पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है।

विभंगज्ञानियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

आभिनिबोधिक, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे इसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिक-शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातन-कृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष

वेउव्वियसंघादणकदी[1] असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ।

मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्ज-गुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ।

केवलणाणीणमवगदवेदभंगो । एवं केलदंसणि[2] - जहाक्खादसंजदाणं । संजदाणं मणुसपज्जत्तभंगो । णवरि ओरालियसंघादणं णत्थि । एवं सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धि-संजदाणं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसां-पराइयसुद्धिसंजदेसु तिण्णि वि पदा सरिसा । संजदासंजदाणं मणपज्जवभंगो । णवरि विसेसो

....

अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

मन:पर्ययज्ञानियोमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

केवलज्ञानी जीवोंकी प्ररूपणा अपगतवेदियोंके समान है । इसी प्रकार केवलदर्शनी और यथाख्यातसंयत जीवोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । संयत जीवोंकी प्ररूपणा मनुष्य पर्याप्तोंके समान है । विशेष इतना है कि उनमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति नहीं होती । इसी प्रकार सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंमें तीनों ही पद सदृश हैं । संयतासंयत जीवोंकी प्ररूपणा मन:पर्ययज्ञानियोंके समान है । विशेष इतना है कि जहां संख्यात-

....

१ इत प्रारभ्य विसेसाहिया-पर्यन्तोऽयमधस्तन: प्रबन्ध: काप्रतौ नोपलभ्यते ।

२ प्रतिषु 'दंसणीओ' इति पाठ: ।

जम्हि संखेज्जगुणं तम्हि असंखेज्जगुणं कायव्वं । असंजदाणं मदिअण्णाणिभंगो ।

चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणीणं कोधभंगो । ओहिदंसणीणं ओहिणाणिभंगो । किण्ण-णील-काउलेस्सियाणं असंजदभंगो । तेउलेस्सिएसु[1] सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्विसंघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ।

पम्मलेस्सिएसु[2] सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-

....

गुणा कहा गया है वहां असंख्यातगुणा करना चाहिये । असंयत जीवोंकी प्ररूपणा मतिअज्ञानियोंके समान है ।

चक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा त्रस पर्याप्तोंके समान है । अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा क्रोधकषायी जीवोंके समान है । अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है । कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले जीवोंकी प्ररूपणा असंयत जीवोंके समान है । तेजलेश्यावालोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

पद्मलेश्यावाले जीवोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।

....

१ प्रतिषु 'वेउ०' इति पाठः । २ प्रतिषु 'पम्मलेस्सीसु' इति पाठः ।

कदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ।

सुक्कलेस्सिएसु आहारतिगमोघं । तदो ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ।

भवसिद्धिया ओघं । अभवसिद्धियाणं मदिअण्णाणिभंगो ।

सम्मत्ताणुवादेण सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । ओरालिय-

....

उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

भव्यसिद्धिक जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । अभव्यसिद्धिक जीवोंकी प्ररूपणा मतिअज्ञानियोके समान है ।

सम्यक्त्वमार्गणानुसार आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यात-

संघादणकदी संखेज्जगुणा। सेसस्स आभिणिबोहियभंगो।

खइयसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी। परिसादणकदी संखेज्जगुणा। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा। ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा। परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया।

उवसमसम्माइट्ठीणं विभंगभंगो। सासणे सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालयसंघादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया।

मिच्छादिट्ठीणं मदिअण्णाणि भंगो। वेदगसम्मादिट्ठीणमोहिभंगो। सम्मामिच्छाइट्ठीसु

....

गुणे हैं। शेष पदोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोके समान है।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा विभंगज्ञानियोके समान है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा मतिअज्ञानियोके समान है। वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोके समान है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातन-

सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी। परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया।

सण्णीसु पुरिसभंगो। असण्णी तिरिक्खोघं। आहारीणं कायजोगिभंगो। अणाहारएसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा। एवं परत्थाणप्पाबहुगं समत्तं। इदि मूलकरणकदी परूवणा कदा।

जा सा उत्तरकरणकदी णाम सा अणेयविहा। तं जहा-असि-वासि-परसु-कुडारि-चक्क-दंड-वेम-णालिया-सलाग-मट्टियसुत्तोदयादीण-मुवसंपदसण्णिज्झे ॥ ७२ ॥

कधं मट्टियादीणमुत्तरकरणत्तं? पंचसरीराणं जीवादो अपुधब्भूदत्तेण सकलकरणकारण-

....

कृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

संज्ञी जीवोंकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोके समानं है। असंज्ञी जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यंच ओघके समान है। आहारक जीवोंकी प्ररूपणा काययोगियोके समान है। अनाहारक जीवोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त अनन्तगुणे हैं। इस प्रकार परस्थानअल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इस प्रकार मूलकरणकृतिकी प्ररूपणा की गई है।

जो वह उत्तरकरणकृति है वह अनेक प्रकारकी है। यथा - असि, वासि, परशु, कुदारी, चक्र, दण्ड, वेम, नालिका, शलाका, मृत्तिका, सूत्र और उदकादिकका सामीप्य कार्योंमें होता है ॥ ७२ ॥

शंका - मृत्तिका आदि उत्तरकरण किस प्रकार हैं?

समाधान - जीवसे अपृथक् होनेके कारण अथवा समस्त करणोके कारण होनेसे

भावेण वा उवलद्धमूलकरणववएसाणं करणत्तादो। उत्तरकरणकदी अणेयविहा त्ति पइज्जा। असि-वासियादीणमुवसंपदसण्णिज्झे इदि साहणमेयमण्णहाणुववत्तिगब्भत्तादो। द्रव्यमुपसंपद्यते आश्रीयते एभिरिति उपसंपदानि कार्याणि, तेषां सान्निध्यं उपसंपदसान्निध्यम्। तस्मादसि-वासि-परशु-कुडारि-चक्र-दण्ड-वेम-नालिका-शलाका-मृत्तिका-सूत्रोदकादीनामुपसंपदसान्निध्यादुत्तरकरणकृतिरनेकविधा। न कार्यसान्निध्यं करणभेदस्यागमकम्, तद्विशेषाश्रयणे तदेकत्वानुपपत्तेः।

जे चामण्णे एवमादिया सा सव्वा उत्तरकरणकदी णाम ॥ ७३ ॥

'जे च अमी अण्णे' एदेण करणाणमियत्तावहारणप्पडिसेहो कदो। सा सव्वा उत्तरकरणकदी णाम।

जा सा भावकदी णाम सा उवजुत्तो पाहुडजाणगो ॥ ७४ ॥

एत्थ पाहुडसद्दो कदीए विसेसिदव्वो, पाहुडसामण्णेण अहियाराभावादो। तदो कदिपाहुडजाणओ उवजुत्तो भावकदि त्ति सिद्धं। णोआगमभावकदी किण्ण परूविदा? ण,

....

मूलकरण संज्ञाको प्राप्त हुए पांच शरीरोके चूंकि वे मृत्तिका आदि करण हैं, अतः वे उत्तर करण कहे जाते हैं।

'उत्तरकरणकृति अनेक प्रकारकी है' यह प्रतिज्ञा है। 'असि, वासि आदिकोंकी कार्योंमें समीपता होनेपर,' यह साधन है; क्योंकि, उसके गर्भमें अन्यथानुपपत्ति निहित है अर्थात् उक्त साधनोके विना कार्यकी सिद्धि नहीं हो सकती। जो द्रव्यका आश्रय करते हैं वे उपसंपद अर्थात् कार्य कहलाते हैं, उनकी समीपता उपसंपदसानिध्य है। इसकारण असि, वासि, परशु, कुदारी, चक्र, दण्ड, वेम, नालिका, शलाका, मृत्तिका, सूत्र और उदक आदि कार्योंकी समीपतासे उत्तरकरणकृति कहलाते हैं। यह उत्तरकरणकृति अनेक प्रकारकी है। कार्यसानिध्य करणभेदका अगमक नहीं है अर्थात् गम ही है; क्योंकि, करणभेदका आश्रय करनेपर उसका एकत्व नहीं बन सकता।

इसी प्रकार और भी जो ये अन्य करण हैं वे सब उत्तरकरणकृति कहलाते हैं ॥ ७३ ॥

'और जो ये अन्य हैं,' इससे करणोंकी संख्याके निश्चयका निषेध किया गया है। वह सब उत्तरकरणकृति है।

प्राभृतका जानकार जो उपयोग युक्त जीव है वह सब भावकरणकृति है ॥ ७४ ॥

यहां सूत्रमें आये हुए प्राभृत पदको कृति विशेषणसे विशेषित करना चाहिये; क्योंकि, यहां प्राभृत सामान्यका अधिकार नहीं है। इस कारण कृतिप्राभृतका जानकर उपयोग सहित जीव भावकृति है, यह सिद्ध हुआ।

शंका - यहां नोआगमभावकृतिकी प्ररूपणा क्यों नहीं की?

ओवइयादिपंचभाउवलक्खियणोआगमदव्वाणं सेसकदीसु अंतब्भावादो ।

सा सव्वा भावकदी णाम ॥ ७५ ॥

कधमेक्किस्से भावकदीए बहुत्तसंभवो ? ण, कदिपाहुडजाणएसु तत्थुवजुत्तजीवाणं बहुत्तदंसणादो ।

एदासिं कदीणं काए कदीए पयदं ? गणणकदीए पयदं ॥ ७६ ॥

गणणपरूवणा किमट्ठमेत्थ कीरदे ? गणणाए विणा सेसाणियोगद्दारपरूवणाणुववत्तीदो । उत्तं च -

जह चिय मोराण सिहा णायाणं लंछणं व सत्थाणं ।
मुक्खारूढं गणियं तत्थब्भासं तदो कुज्जा ॥ १३३ ॥

एवं कदी त्ति सत्तमणियोगद्दारं ।

प्रसिद्धसिद्धान्तगभस्तिमाली समस्तवैयाकरणाधिराजः ।
गुणाकरस्तार्किकचक्रवर्ती प्रवादिसिंहो वरवीरसेनः ॥

....

समाधान - नहीं की गई, क्योंकि, औदयिक आदि पांच भावोंसे उपलक्षित नोआगमद्रव्योंका शेष कृतियोंमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

वह सब भावकृति है ॥ ७५ ॥

शंका - एक भावकृतिमें बहुत्व कैसे संभव है ?

समाधान - नही, क्योंकि, कृतिप्राभृतके जानकारोंमेंसे उसमें उपयोग युक्त जीव बहुत देखे जाते हैं ।

इन कृतियोंमें कौनसी कृति प्रकृत है ? गणनकृति प्रकृत है ॥ ७६ ॥

शंका - यहां गणनाकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान - चूंकि गणनाके विना शेष अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है, अतः उसकी प्ररूपणा की जाती है । कहा भी है -

जिस प्रकार मयूरोंकी शिखा उनका मुख्यतासे रूढ लक्षण है, उसी प्रकार न्याय शास्त्रोंका मुख्य लक्षण गणित है । अतएव इसका अभ्यास करना चाहिये ॥ १३३ ॥

इस प्रकार कृतिअनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।